देवदासी

“अम्मा ये देवदासी क्या होती है?”

चूल्हे की आग भड़काने के लिए फूँक मारते मारते अम्मा अपनी सोला साल की बेटी लाली की आवाज़ सुनकर रुक गयी।

‘काहे?’’अम्मा गरजी “ये फ़ालतू की पंचायत का टेम ना है, जा तय्यार हो जा बड़े मंदिर जाना है “

बड़ी बड़ी आँखे करके अम्मा बोली

लाली हज़ारों सवाल मन में लिए चुपचाप वहाँ से चली गयी।

भगवान के सामने हरे रंग की चोली और लेंगा पहनकर लाली बैठी थी।गिले बालों से झरता पानी और आँखों से बरसता पानी उसके कोमल तन और मन को भिगो रहा था।

पूजा सम्पन्न हुयी और लाली आज देवदासी बन गयी।

तभी वहाँ मंदिर के मालिक पधारे आशीर्वाद लेने अम्मा उसे लगभग घसीटते हुए मालिक के पास ले आयी।मालिक उसका रूप देखकर दंग रह गए हरे रंग में जैसे वो प्रकृति की देवी लग रही थी।

मालिक के नज़रों में कई भाव गुज़र गए।

आज लाली बहुत थक गयी थी,सुबह से लेकर रात तक काम और”काम” ने उसे पूरा निचोड़ दिया था।

मंदिर की सफ़ाई,पूजा,भजन,कीर्तन फिर

द्वार द्वार भिक्षा माँगना,फिर मालिक के घर का काम और फिर रात में मालिक के साथ.....

उसके सपने,भावना के साथ साथ बदन और मन सब टूटकर बिखर रहे थे।

वो सोचने में मजबूर हो गयी के मैं भगवान की दासी हूँ या ...मालिक की ग़ुलाम ??????

ये कैसी प्रथा जो परंपरा की ग्वाही देकर निभाने को मजबूर करती है!!!!!

क्या मैं सच में देवदासी हूँ या मालिक जैसे ठेकेदारों की सोची समझी साज़िश का मोहरा जिसे ग़ुलाम बनाकर रखेल बना दिया जाता है ?

आज भी लाली के मन में अनगिनत सवाल थे पर इसका जवाब किसी के पास नहीं था ....

सुवर्णा परतानी
हैदराबाद